'पत्र' संपादक के नाम

जून, 2014 अंक में ''क्या खूब कहा'' कविता के संकलनकर्त्ता को मेरा स्नेहिल, विनम्र शिष्टाचार सहित अभिवादन। रचना बहुत ही सुंदर है। दैनिक जीवन में प्राय: रोज़ उसकी कड़ी दिखती है। इंसानियत की सही परिभाषा है। गरीब-अमीर की दैनिक चर्चा एवं कर्त्तव्य को सुंदर तरीके से प्रदर्शित किया है। बहुत ही शिक्षाप्रद है।

– भुवनेश्वर प्रसाद गुप्ता,
रिटायर्ड पोस्ट मास्टर, दुर्ग

जुलाई, 2014 'स्वर्ण जयंती विशेषांक' बहुत ही विशेष है। ज्ञानामृत के प्रति दादियों और वरिष्ठ भाइयों-बहनों के शुभकामना संदेश अपनी अलग ही खुशबू बिखेर रहे हैं। लेखकों की अनुभूतियाँ इसकी शान में चार-चांद लगा रही हैं। प्रत्येक लेख सोने जैसा विशेष है। ''दीदी की अद्भुत पालना और सम्भाल'' लेख द्वारा सरल शब्दों में दीदी जी की महिमा को जाना। ''बिछुड़ने लगा तो रोने न दिया'' लेख के अन्त में लिखी कविता बहुत सुन्दर है। ''मैंने जाना सच्ची खुशी को'' लेख में लेखिका बहन ने अपना अनुभव इतना सच्चाई और सफाई से लिखा कि रोम-रोम खुशी से झूम उठा और एक नई प्रेरणा मिली।

– ब्रह्माकुमार विनोद, टोंक

मई, 2014 के सम्पादकीय लेख 'व्यवहारिक सौन्दर्य' से सीख मिली कि प्रतिदिन स्थूल दर्पण में देखकर हम अपने बाल संवार लेते हैं, कपड़े व्यवस्थित कर लेते हैं इसी प्रकार प्रतिदिन ज्ञान-दर्पण में देखकर व्यवहारिक सौन्दर्य को भी ठीक कर लेना चाहिए।

– ब्र.कु.नीलकन्ठ, धनबाद

ज्ञानामृत के एक अनुभव ने मेरी ज़िंदगी बदल दी। मैं जिस दिन से बाबा की बच्ची बनी उसी दिन से इसे नियमित पढ़ती आ रही हूँ। नियमित योगाभ्यास और ज्ञान श्रवण से हर परिस्थिति को सहज पार कर लेती हूँ। लेकिन एक दिन ऐसा आया जो मेरे लिए एक बात को सहन करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन हो गया। बाबा को सब बताकर योग लगाने बैठी पर मन हलचल से भरा था, एकाग्र ही नहीं हो रहा था। घर में भी किसी काम में मन नहीं लग रहा था। बहुत बेचैन थी, क्या करूँ, क्या नहीं? विचार आया, ज्ञानामृत निकालकर पढ़ूँ। बस मैंने ज्ञानामृत का ''मन पर जीत'' लेख पढ़ा और मेरा पूरा मूड ही चेंज हो गया। इसलिए कहती हूँ, यह साधारण पत्रिका नहीं, अध्यात्म से भरपूर, मनोरंजन से भरी हुई शक्तिशाली टॉनिक है जिसे पढ़कर बुद्धि फ्रेश, शक्तिशाली हो जाती है। मन शांत और सरल हो जाता है। जितना लिखूँ उतना कम है। ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ ज्ञानामृत परिवार को धन्यवाद।

''परमपिता परमेश्वर की जो
यश-गाथा को गाता
पुत्र बनें हम पिता के सच्चे
'ज्ञानामृत' सिखलाता''

– ब्रह्माकुमारी कल्पना लाहोटी,
पूर्व नगराध्यक्षा, जालना

हर आत्मा को बहुत भाती है
उदास मन में उमंग जगाती है
यदि आप हार गए
तो निराश मत होना
विपरीत परिस्थितियों में भी
कभी आश मत खोना
उठा लें 'ज्ञानामृत' और पढ़ लें
यहीं से आशा की किरण आती है
रोती-सिसकती आत्माओं को
बड़े प्यार से सहलाती है
एक-एक लेख पढ़ने से
आत्मजागृति हो जाती है
निर्धनता मिटती और
झोली ज्ञानधन से भर जाती है
जीवन के सूनेपन में बहार ले आती है
सच कहूँ तो 'ज्ञानामृत'
हर आत्मा को अमृत पिलाती है।

– ब्रह्माकुमार झालम, राजनांदगाँव